दरदवंद दिलिबरु, परतखि डि्ठो पांहिंजो,
सामी संगि साधूअ जे, दिलि जो खोले दरु,
कंहिंखे सले कीनकी, अनभइ सुखु अजरु,
करे कीअं पधरु, नाजुकु धागो नींहं जो.

दरदवंद (प्रभु के प्रेम में पीड़ित), सच्चे प्रेमी (साधक) ने, अपने प्रियतम को प्रत्यक्ष देख लिया, परमेश्वर का साक्षात् अनुभव किया। सामी साहब कहते हैं कि उस प्रेमी ने साधु (सतगुरु) के संग-सहवास में आने पर अपने मन का द्वार खोल कर भीतर अपने प्रियतम परमेश्वर के दर्शन कर लिए। दरदवंद को अंतर्ज्ञान से इतना आनंद प्राप्त हुआ वह दूसरे किसी को भी अपने आनंद के संबंध में बताने को तैयार नहीं है। भला प्रेम के ऐसे नाजुक धागे को संसार के सामने कैसे प्रकट करे?

परमेश्वर के प्रति अपने मन में असीम प्रेम धारण करने वाले प्रेमी भक्त परम आत्मा को मन के अंदर देखना चाहते हैं। ऐसे निष्ठावान भक्त प्रभु के दर्शन के लिए, उसे पाने के लिए ऐसे तड़पते रहते हैं, जैसे चातक पंछी स्वाति नक्षत्र की वर्षा की एक बूँद के लिए अथवा पतिव्रता स्त्री अपने पति के विरह में तड़पती, रोती रहती है। भक्त भी परमात्मा के दर्शन का प्यासा होता है। मीराबाई भी प्रभु के प्रेम की दीवानी थी। उनके पदों में उनका यह दर्द झलकता है। गोपियों का विरह भी ऐसा ही था। सामीजी कहते हैं कि अपवाद रूप में कोई ऐसा प्रेमी भक्त होगा, जो सतगुरु की कृपा से अपने मन का द्वार खोलकर भीतर झाँकने का प्रयत्न करता है। गुरु-कृपा से ही वह प्रभु के दर्शन करता है।

यह आत्म-प्रतीति अथवा आत्मानुभव कैसा होता है? भला शाश्वत सत्य के विशुद्ध अनुभव का आनंद किस प्रकार वर्णित किया जा सकता है? क्योंकि ईश्वरीय प्रेम का अपनी आँखों से, जीते जी अनुभव प्राप्त करना, साक्षात्कार करना अवर्णनीय होता है। अलौकिक आनंद का वर्णन करते समय हमारे शब्द बहुत ही छोटे प्रतीत होने लगते हैं, भाषा पंगु बन जाती है। वह आनंद मात्र अनुभूति का विषय होता है, जो किसी को बताया नहीं जा सकता। ठीक उसी प्रकार जैसे गूँगा मनुष्य गुड़ का स्वाद ले तो सकता है, किन्तु दूसरो को बताने में असमर्थ होता है। प्रभु के दर्शन का आनंद वर्णनातीत होता है।

मन-भावन के मिलन कौं, सुख कौं नाहिन छोर।
बोलि उठै नचि-नचि उठै, मोर सुनत घनघोर।।

■